28

ज़्या यीशु को ध्यान है?

बाइबल पाठ #10

V. दूसरे से तीसरे फसह तक (क्रमशः)।

छ. एक सूबेदार के सेवक को चंगा किया गया (मत्ती 8:1, 5–13; लूका 7:1–10)।

ज. एक विधवा का पुत्र जिलाया गया (लूका 7:11–17)।

झ. यूहन्ना बपस्तिमा देने वाले को उत्तर दिया गया (मत्ती 11:2–30; लूका 7:18–35)।

ञ. यीशु के पांव का अभिषेक किया गया (लूका 7:36–50)।

परिचय

पहाड़ी उपदेश देने के बाद ''जब वह (यीशु) उस पहाड़ से उतरा, तो एक बड़ी भीड़ उसके पीछे हो ली'' (मत्ती 8:1)। उसके बाद तो मसीह जहां भी जाता, भीड़ उसके साथ रहती थी (देखें लूका 7:9, 11)।[1] परन्तु यीशु ने अपने इर्द–गिर्द के लोगों को भीड़ के एक जमावड़े के रूप में नहीं, बल्कि उन्हें ज़रूरतमंद लोगों के रूप में देखा। लूका 7:13 का एक वाक्यांश मसीह के व्यवहार को दर्शाता है: ''उसे देखकर *प्रभु को तरस आया, ...*।''

इस पाठ में हम महान गलीली सेवकाई के अध्ययन को जारी रखेंगे। मैं इस पाठ को ''ज़्या यीशु को ध्यान है ?'' नाम दे रहा हूं।[2] पवित्र शास्त्र की इन आयतों में अपने इर्द–गिर्द के लोगों के लिए यीशु के ध्यान और तरस के चार स्पष्ट उदाहरण मिलते हैं। चारों घटनाएं लूका की पुस्तक में हैं, सो मैं पाठ के मूल स्रोत के रूप में लूका की पुस्तक का इस्तेमाल कर रहा हूं। दो घटनाएं मत्ती की पुस्तक में भी हैं, जिनका इस्तेमाल मैं अतिरिज़्त स्रोत के रूप में कर रहा हूं।

जब बीमारी हमारे घरों पर हमला करती है तो यीशु को ध्यान होता है (मत्ती 8:5-13; लूका 7:1-10)

अपना पहाड़ी उपदेश समाप्त करने के बाद, यीशु कफ़रनहूम में लौट गया (लूका 7:1)। वहां, एक सूबेदार ने अपने सेवक को चंगा करने की विनती करने के लिए कुछ यहूदियों को मसीह के पास भेजा (लूका 7:2–5)।[3] शायद उसने एक साथी के पुत्र को यीशु द्वारा पहले चंगा करने की बात सुनी थी (यूहन्ना 4:46–54)।[4]

सूबेदार एक सौ से अधिक सिपाहियों पर रोमी अधिकारी होता था (जैसा उसके पद

से संकेत मिलता है)। इस सूबेदार के यहूदी समुदाय से अच्छे सज़्बन्ध थे। उसने उनके आराधनालय के भवन के लिए धन उपलज़्ध करवाया था।[5] वह "परमेश्वर का भय मानने वाला" भी हो सकता है, जिसका विश्वास यहोवा पर था, परन्तु उसने अपना धर्म नहीं बदला था (देखें प्रेरितों 13:16)।[6] अब वह अपने एक सेवक के लिए चिन्तित था।

हमें बताया गया है कि वह सेवक "उसके घर में लकवा रोग से बहुत दुखी पड़ा" था और "मरने पर था" (मज़्ती 8:6; लूका 7:2)। लूका के वृज़ांत में लिखा गया है कि वह सेवक सूबेदार का "प्रिय था" (7:2)। ज़्या कभी आपका कोई "प्रिय"-मित्र, रिश्तेदार, या आपके घर का कोई सदस्य गज़्भीर रूप से बीमार हुआ है? यदि हां तो आप उस सूबेदार की चिन्ता को समझ सकते हैं। ऐसे समयों में, हमें विचार आता है कि "ज़्या यीशु को सचमुच ध्यान है?" यह कहानी हमें याद दिलाती है कि हां उसे हमारा ध्यान है।

यीशु उस सिपाही के घर जाने लगा, परन्तु उसने संदेश भेज दिया कि वह इस योग्य नहीं है कि मसीह उसके घर आए। उसने यीशु के आत्मिक अधिकार को माना (लूका 7:6-8)। "यह सुनकर यीशु ने अचज़्भा किया, और जो उसके पीछे आ रहे थे, उन से कहा, मैं तुम से सच कहता हूं, मैंने इस्राएल में भी ऐसा विश्वास नहीं पाया" (मज़्ती 8:10)।[7] "और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया" (मज़्ती 8:13ख)।

यीशु आज पृथ्वी पर चल नहीं रहा है और आश्चर्यकर्म करने का उसका समय भी अब नहीं है; परन्तु आज भी जब हमारे घरों पर बीमारी हमला करती है तो उसे हमारा ध्यान होता है। वह हर दिन हमारी आवश्यकता के अनुसार हमें सामर्थ देता है (इब्रानियों 13:5ख, 6)।

मेरा मन दुखी होने पर जब आनन्द और गीत के लिए तरसता है
तो ज़्या यीशु को ध्यान होता है;
जब बोझ दबाते, और चिन्ताएं सताती हैं,
और रास्ता बड़ा बोझिल और लज़्बा होता है?

हां, उसे ध्यान होता है; मैं जानता हूं उसे ध्यान होता है,
उसका मन मेरे दुख से दुखी होता है;
जब दिन बोझिल हों, डरावनी रातें लज़्बी,
मैं जानता हूं कि मेरे उद्धारकर्ज़ा को मेरा ध्यान होता है।[8]

जब मौत हमारे दिल तोड़ती है तो यीशु को ध्यान होता है (लूका 7:11-17)

"थोड़े दिन बाद,"[9] मसीह नाईन नामक एक नगर को चला गया (लूका 7:11), जो कफ़रनहूम से दक्षिण-दक्षिण पश्चिम में बीस या इससे अधिक मील दूर था।[10] जब यीशु, अपने चेलों और हर समय साथ रहने वाली भीड़ के साथ "नगर के फाटक के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मुर्दे को बाहर लिए जा रहे थे; जो अपनी मां का इकलौता पुत्र था, और वह विधवा थी" (आयत 12)।

उस ज़माने में, विधवा को नि:सहाय समझा जाता था। अपने पति की मृत्यु के बाद, इस औरत का सहारा उसका यह पुत्र ही था। फिर एक और त्रासदी ने उसे झिंझोड़ कर रख दिया, ज़्योंकि उसका इकलौता पुत्र मर गया। उसकी बुढ़ापे की लाठी टूट गई। आप में से कुछ लोग समझ सकते हैं कि उस स्त्री की हालत कैसी हो गई होगी। यदि वह आपका कोई इतना निकट होता जिसे आप अपने प्राणों से भी अधिक चाहते थे, परन्तु वह मर गया। आपको लगता कि जैसे आपका कलेजा फटकर बाहर आ रहा है।

जब मौत लोगों के दिल तोड़ती है तो ज़्या यीशु को ध्यान होता है? आयत 13 कहती है कि नाईन की उस विधवा को देखकर ''प्रभु को तरस आया।'' जब हमारी आंखों में आंसू आते हैं तो हम पर भी वह तरस करता है (याकूब 5:11ख)।

मसीह ने उस स्त्री से न रोने के लिए कहा (आयत 13ख)। फिर उसने अर्थी को छुआ[11] और उसके पुत्र से बात की: ''हे जवान, मैं तुझ से कहता हूं, उठ!'' (आयत 14)। ''तब वह मुर्दा उठ बैठा [यह दिखाते हुए कि उसका शरीर चंगा हो गया था], और बोलने लगा [यह दिखाते हुए कि उसका दिमाग भी स्वस्थ हो गया था]'' (आयत 15क)।

यीशु की सेवकाई में[12] मुर्दे को जिलाने की यह पहली लिखित घटना है, परन्तु यह बीमारों को चंगा करने के उसके काम का केवल विस्तार ही था। दोनों ही प्रकार के आश्चर्यकर्म शारीरिक देह को नाश करने वाली शज़्तियों को भगा देते थे। जो भी कोई शरीर को चंगा करने की क्षमता होने का दावा करता है, उसे मुर्दे को जिलाने में भी सक्षम होना चाहिए।[13]

उस जवान को बैठे देखकर वहां उपस्थित सब लोग स्तज़्ध रह गए। ''... वे परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे कि हमारे बीच में एक बड़ा भविष्यवज़्ता उठा है, और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है'' (आयत 16)।

कहानी का मेरा पसन्दीदा भाग आयत 15 का अन्त है: ''और यीशु ने उसे उसकी मां को सौंप दिया।'' ज़्या आप उस जवान का हाथ उसकी मां के हाथ में देते हुए मसीह के चेहरे की कोमलता की तस्वीर बना सकते हैं? ज़्या आप उस मां के गालों पर इस घटना से आंसू गिरते देख सकते हैं?

आज हमारे युग में आश्चर्यकर्म नहीं होते। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जब मौत हमें तोड़कर रख देती है तो यीशु को परवाह नहीं होती। वह हमें उस दिन के लिए सामर्थ देता है (यिर्मयाह 16:19क) और हम उस महान दिन की राह देखते हैं, जब वह मुर्दों को जिलाएगा और हम अपने प्रियजनों को फिर से मिलेंगे (1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18)।

मेरे पृथ्वी पर अपने सबसे प्रिय को
''अलविदा'' कहने पर ज़्या यीशु को ध्यान होता है,
और मेरे मन के इतना दुखी होने पर कि वह फटने वाला हो
ज़्या उसे कुछ फर्क पड़ता है? ज़्या वह देखता है?

हां, उसे ध्यान होता है; मैं जानता हूं उसे ध्यान होता है,

उसका मन मेरे दुख से दुखी होता है;
जब दिन बोझिल और डरावनी रातें लज़्बी हो,
मैं जानता हूं कि मेरे उद्धारकर्ज़ा को मेरा ध्यान होता है।

जब संदेह हमारे मनों को प्रताड़ित करता है तो यीशु को ध्यान होता है (मज़ी 11:2-30; लूका 7:18-35)

यीशु द्वारा मुर्दे को जिलाने की बात पूरे देश में, यहां तक कि यहूदिया के दक्षिण तक फैल गई (लूका 7:17[14]), जहां हेरोदेस ने यूहन्ना को कैद किया था। जोसेफस के अनुसार, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को मृत सागर के पूर्वी छोर पर, मकेरस नामक स्थान पर हेरोदेस के महल में बन्दी बनाकर रखा गया था।[15]

जब यूहन्ना के चेलों ने उसे मसीह के काम के बारे में बताया, तो उसने प्रभु के पास[16] दो चेलों को पूछने के लिए भेजा कि "ज़्या आने वाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की बाट देखें?" (लूका 7:19ख)। यूहन्ना ने पहले "जो मेरे बाद *आने वाला* है" कहने के लिए इसी शज़्द का इस्तेमाल किया था (मज़ी 3:11)।

यूहन्ना के बिना किसी हिचकिचाहट से यह घोषणा करने के कारण कि यीशु ही मसीहा था (जो आने वाला था) (यूहन्ना 1:29-36; 3:23-30), कुछ टीकाकार इस सज़्भावना को मानने को तैयार नहीं हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जल्द ही पीछे हट जाने वाला था। परन्तु बाइबल अपने नायकों को त्रुटियों से मुज़्त नहीं दिखाती। यदि हम बाइबल की बात को इसके अति स्वाभाविक अर्थ में लें, तो काले किले के नीचे अंधेरी कोठरी में, यूहन्ना अपने विश्वास से संघर्ष कर रहा था।

मुझे यह समझने में, कि यह कैसे हुआ, कोई कठिनाई नहीं है। पहली बात तो यह कि जंगल के इस ओजस्वी आदमी को निष्क्रिय रहने के लिए विवश किया गया था। उसे कई महीने तक जेल में रखा गया था। यह उसके दिमाग को नष्ट करने जैसा था। नष्ट हो रहे विचारों को अलग रखना दिन-ब-दिन कठिन हो रहा था।

इसके अलावा यीशु का ऐसा कोई कार्यक्रम नहीं था, जिसकी यूहन्ना को अपेक्षा थी। यूहन्ना ने मसीहा को कुल्हाड़ा चलाते खलिहान को पूरी तरह से साफ़ करते हुए व्यज़्ति के रूप में दिखाया था (मज़ी 3:10, 12)।[17] राज्य के लिए यूहन्ना की अवधारणा भी शायद हर यहूदी की तरह सांसारिक ही है (प्रेरितों सहित; प्रेरितों 1:6)। उसे उज़्मीद होगी कि प्रभु रोम को पराजित करने और अधर्मी यहूदी अगुओं को नगर से निकालने के लिए एक सेना तैयार करेगा।[18] उसे अपने आप को छुड़ाने और हेरोदेस को दण्ड देने के लिए मसीह के आने की भी उज़्मीद होगी। इसके बजाय, यीशु "केवल" शिक्षा देते और लोगों की सहायता करते हुए देश में जा रहा था।

हेरोदेस और हेरादियास का चरित्र जानते हुए, यूहन्ना ने पहले अनुमान लगा लिया होगा कि उसकी मृत्यु निश्चित है। इसलिए यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसे आश्वासन की इच्छा थी: "ज़्या मैंने परमेश्वर का दिया कार्य पूरा किया है या मेरी मेहनत

बेकार गई है ?'' इसलिए उससे यह पूछने के लिए कि ''ज़्या आने वाला तू ही है, या हम किसी और दूसरे की बाट देखें ?'' (लूका 7:19) अपने चेलों को यीशु के पास भेज दिया।

हम सभी के मन में, कभी न कभी अपने विश्वास के बारे में प्रश्न उठते हैं। कइयों ने तो संदेह के काले संताप को भी झेला है। यह जान लें कि जब तक हम परमेश्वर के लिए द्वार बन्द नहीं करते, तब तक वह भी हमारे लिए अपने द्वार बन्द नहीं करता।[19] जब तक हमारे मन ईमानदारी से वचन की खोज करते हैं, प्रभु भी हमारे साथ बच्चों की तरह धीरज रखता है (लूका 8:15; 1 पतरस 2:2; 1 तीमुथियुस 1:16)। जब संदेह हमारे मनों को प्रताड़ित करता है, तो यीशु को ध्यान होता है।

यूहन्ना के चेलों ने मसीह को चंगाई देते हुए व्यस्त पाया। प्रश्न सुनकर उसने उन्हें अपने गुरु को यह बताने के लिए नहीं कहा कि ''ऐसे प्रश्न पूछने के लिए तुज़्हें शर्म आनी चाहिए!'' बल्कि, उसने उन से कहा ''जो कुछ तुम ने देखा और सुना है, जाकर यूहन्ना से कह दो; कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते-फिरते हैं, मुर्दे जिलाए जाते हैं; और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है'' (लूका 7:22)। यह उज़्र यशायाह 35:5 और यशायाह 61:1 से मसीहा के परिचित उद्धरणों की ओर संकेत करता है। यीशु, यूहन्ना को यह आश्वासन देना चाहता था कि निस्संदेह वह उस कार्यक्रम को पूरा नहीं कर रहा था, जो *लोगों ने* मसीहा के लिए सोचा था, बल्कि वह तो *परमेश्वर* के कार्यक्रम को पूरा कर रहा था।

उसने आगे कहा, ''धन्य है वह, जो मेरे कारण ठोकर न खाए'' (लूका 7:23)।[20] दूसरों को यीशु के दावों से ठोकर लगी (मज़्ी 13:57), परन्तु मसीह यूहन्ना को उनमें शामिल नहीं करना चाहता था। यह यूहन्ना को ''विश्वास में बने रहने'' के लिए प्रोत्साहित करने का उसका ढंग था। एक वाज़्य रचना में ''धन्य है वह जिसका मुझ में विश्वास कम नहीं होता।''[21]

यूहन्ना के प्रश्न से यीशु ने दो संदेश दिए। पहला यूहन्ना का समर्थन था (लूका 7:24-30)। जे. डज़्ल्यू मैज़्गर्वे ने यह उत्साहवर्धक विचार लिखा है: ''न एक कार्य से चरित्र बनता है और न एक संदेह से यह बिगड़ जाता है।''[22]

मसीह ने ज़ोर दिया कि यूहन्ना मलाकी की भविष्यवाणी वाला दूत था (लूका 7:27; मलाकी 3:1; देखें मज़्ी 11:10; मरकुस 1:2)-''एलिय्याह जो आने वाला था'' (मज़्ी 11:14; मलाकी 4:5)। उसने कहा कि ''जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उन में से यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं'' (लूका 7:28क)। कितनी ज़बर्दस्त सराहना है यह!

फिर यीशु ने ये अद्भुत शज़्द जोड़े: ''पर जो परमेश्वर के राज्य में छोटे से छोटा है, वह उससे भी बड़ा है'' (लूका 7:28ख)। जो कुछ यीशु ने यूहन्ना के बारे में कहा, उसके सच होने का एक ही प्रमाण है कि यूहन्ना कभी उसके राज्य में नहीं था। एक ''पुरानी कहावत है, जिसमें कहा गया है, 'बड़े से बड़े लोगों में से सबसे छोटा, छोटे से छोटों में से बड़े से बड़ा है,' जिसे यह कहा जा सकता है कि छोटे से छोटा हीरा बड़ी से बड़ी चट्टान (काले पत्थर) से अधिक कीमती है।''[23] यूहन्ना ने राज्य/कलीसिया के लिए मार्ग तैयार किया, परन्तु उसके महत्वपूर्ण भाग होने का सौभाग्य आपको और मुझे मिला है!

लोग यूहन्ना के लिए मसीह की प्रशंसा से आनन्दित हुए, ज़्योंकि उसने उन्हें बपतिस्मा दिया था (लूका 7:29)। इससे यीशु को याद आया कि यहूदी अगुवे यूहन्ना की शिक्षा को नहीं मान रहे थे: "पर फरीसियों और व्यवस्थापकों ने उस से बपतिस्मा न लेकर परमेश्वर के अभिप्राय को अपने विषय में टाल दिया" (लूका 7:30)।

इससे मसीह ने अविश्वास पर दूसरा संदेश दिया, जिससे वह चकित और उदास हुआ। उसने फरीसियों को संतुष्ट न होने वाले ज़िद्दी बच्चों की तरह होने के लिए डांटा: उन्होंने यूहन्ना की उसके तप के लिए आलोचना की थी, और अब उन्होंने यीशु पर भी उसके मिलनसार होने के लिए दोष लगाया था (लूका 7:31-34)। उसने उन नगरों को डांटा, जिन्होंने उसके आश्चर्यकर्मों का लाभ उठाया था,[24] जिनके लोगों ने इसके बावजूद उसे ठुकराया था (मज़ी 11:20-24)।

मसीह का दुखी मन अपने पिता की ओर मुड़ा। उसके होंठों से परमेश्वर के इस धन्यवाद के साथ प्रार्थना निकली कि उसने "इन बातों को ज्ञानियों और समझदारों से छिपा रखा [फरीसियों जैसे लोगों से जो अपने आप को बुद्धिमान समझते थे (यूहन्ना 9:40)], और बालकों पर प्रकट किया है [जो अपनी आवश्यकता को स्वीकार करने के लिए दीन बनते हैं (मज़ी 5:3; 18:3)]" (मज़ी 11:25)। फिर यीशु ने भीड़ की ओर मुड़कर वह बात कही, जिसे प्राय: सबसे बड़ा निमन्त्रण कहा जाता है:

> हे सब परिश्रम करने वालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुज़्हें विश्राम दूंगा। मेरा जूआ अपने ऊपर उठा लो[25] और मुझ से सीज़ो। ज़्योंकि मैं नम्र और मन में दीन हूं; और तुम अपने मन में विश्राम पाओगे। ज़्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है (मज़ी 11:28-30)।

बहुत से लोग जीवनभर भारी बोझ उठाने के लिए संघर्ष करते रहते हैं। शायद आप भी उन्हीं में से एक हैं। शायद आप संदेह के बोझ तले दबे हैं, जैसे यूहन्ना दबा था। यदि यह बात है, तो आनन्दित हों कि यीशु को आपका ध्यान है।

> ज़्या मेरे मार्ग में अन्धेरा होने पर बेनाम खौफ़ और
> खतरे में यीशु को ध्यान होता है?
> दिन का प्रकाश रात की घनी परछाइयों में ढलने पर,
> ज़्या यीशु को ध्यान है कि वह मेरे निकट रहे?
>
> हां, उसे ध्यान होता है; मैं जानता हूं उसे ध्यान होता है,
> उसका मन मेरे दुख से दुखी होता है;
> जब दिन बोझिल, और डरावनी रातें लज़्बी हों,
> मैं जानता हूं कि मेरे उद्धारकर्ज़ा को मेरा ध्यान होता है।

हमारे जीवनों में पाप भर आने पर यीशु को ध्यान होता है (लूका 7:36-50)

लूका 7:36 तो जैसे एक अचज़्भे की तरह आता है। यीशु द्वारा फरीसियों को फटकार लगाने के तुरन्त बाद (लूका 7:30–35), हम पढ़ते हैं, ''फिर किसी फरीसी ने उस से विनती की, कि मेरे साथ भोजन कर'' (आयत 36क)।[26] इस फरीसी का नाम शमौन था (आयत 40)। मसीह द्वारा उसके निमन्त्रण को स्वीकार कर लेने पर, जो कुछ हुआ उस कहानी को ''यीशु की पूरी सेवकाई की सबसे मर्मस्पर्शी कहानियों में से एक'' कहा जाता है।

उस वृज़ांत को संक्षेप में देखने से पहले,[27] मैं यह ज़ोर देना चाहता हूं कि यह अभिषेक की वह घटना नहीं है, जो मसीह के जीवन के अन्त के निकट घटी थी (मज़ी 26:6–13; मरकुस 14:3–9; यूहन्ना 12:3–8)। दोनों की कुछ बातें मिलती-जुलती हैं,[28] परन्तु स्थान, समय, अवसर, लोग और परिणाम अलग थे। (मैं यह भी ध्यान दिलाना चाहूंगा कि इस प्रसिद्ध विचार के लिए कि लूका 7 अध्याय की कहानी वाली पापिन स्त्री का नाम मरियम मगदलीनी होने का पवित्र शास्त्र समर्थन नहीं करता है।[29])

आइए कहानी में चलते हैं। हमें पज़्का पता नहीं है कि शमौन यीशु को अपने घर ज़्यों बुलाना चाहता था।[30] जो भी कारण हो, परन्तु वह बुरी तरह से असत्कारशील था (आयतें 44–46)। मेज़बान के असज़्मान के विपरीत, कहानी एक पापिन स्त्री के प्रेम के लगाव के बारे में बताती है, जो उस भोज में बिन बुलाए चली आई थी। पीछे खड़ी होकर वह ''रोते हुए, उसके पांवों को आंसुओं से भिगोने और अपने सिर के बालों से पोंछने लगी और उसके पांवों को बार-बार चूमकर उन पर इत्र मला'' (आयत 38)।

यह देखकर शमौन स्तज़्ध रह गया। उसने मन में विचार किया, ''यदि यह भविष्यवज़्ता होता[31] तो जान जाता कि यह जो उसे छू रही है, वह कौन और कैसी स्त्री है? ज़्योंकि वह तो पापिन है'' (आयत 39)। उस फरीसी को लगा कि वह यह दोष लगा रहा है कि यीशु कौन है; वास्तव में वह अपनी ही आत्मिक स्थिति पर दोष लगा रहा था।

शमौन के मन के विचारों को जानकर मसीह ने दो कर्जदारों का संक्षिप्त, लेकिन सुन्दर दृष्टांत[32] दिया। उस दृष्टांत का हम ''प्रेम, आंसू और क्षमा'' पाठ में विस्तार से अध्ययन करेंगे। यीशु ने समझाया कि उस फरीसी की तरह अपनी आत्मिक आवश्यकताओं के प्रति अचेत व्यज़्ति ''कम प्रेम करता'' है। इसके विपरीत, जिस स्त्री ने पाप किया था, उसने यह अहसास किया कि वह अपने पाप का कर्ज चुकाने के योग्य नहीं है। इसलिए, जब उसे क्षमा किया गया, तो उसने ''बहुत प्रेम किया'' (आयत 47)।

ज़्या पाप ने कभी आप पर नियन्त्रण करने की कोशिश की है? ज़्या आप कभी अपनी किसी बात या काम के लिए रात भर बेचैन रहे हैं? ज़्या आप ने कभी दोष लगाने वाले विवेक की पीड़ा सही है? निश्चय ही आपने सही है। हम *सब* पापी हैं (रोमियों 3:23), जो अपने पाप का कर्ज नहीं चुका सकते (रोमियों 6:23)। यह जानना अद्‌भुत है कि हमारे जीवनों में पाप आने पर यीशु को हमारा ध्यान होता है और उसे हमारी परवाह होती है। यह अहसास करना अद्‌भुत है कि, यदि हम अपने पापों को मानकर उसके पास लौट आएं,[33]

तो वह हमें क्षमा करके स्वतन्त्र कर देता है (गलतियों 5:1)!

किसी ज़बर्दस्त परीक्षा का सामना करते हुए
कोशिश करने पर मेरे नाकाम रहने पर ?
जब अपने गहरे सदमे के लिए मुझे कोई राहत नहीं मिलती,
चाहे रात भर मेरे आंसू बहते रहे हों, ज़्या यीशु को ध्यान होता है?

हां, उसे ध्यान होता है; मैं जानता हूं उसे ध्यान होता है,
उसका मन मेरे दुख से दुखी होता है;
जब दिन बोझिल और डरावनी रातें लज़्बी हों,
मैं जानता हूं कि मेरे उद्धारकर्ज़ा को मेरा ध्यान होता है।

सारांश

इस पाठ में हमें इस तथ्य के कि यीशु को हमारा ध्यान है और वह हमारी परवाह करता है, चार उदाहरण मिले: यीशु को ध्यान होता है, जब बीमारी हमारे घरों पर हमला करती है; जब मौत हमारे दिल तोड़ती है; जब संदेह हमारे मनों को प्रताड़ित करता है; हमारे जीवनों में पाप भर आने पर यीशु को ध्यान होता है। पतरस ने लिखा है: "इसलिए परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुज़्हें उचित समय पर बढ़ाए। और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, *ज़्योंकि उसे तुज़्हारा ध्यान है*" (1 पतरस 5:6, 7)।

मैं इस पाठ की अन्तिम कहानी की सामान्य प्रासंगिकता बनाता हूं: जिन्हें यह समझ आ जाता है कि यीशु को उनकी कितनी परवाह है: और उसने उनके लिए कितना कुछ किया है, वे उसे उतना ही प्रेम करेंगे और धन्यवाद *प्रकट करेंगे।* प्रभु ने हम पर अपनी बरकतों की बारिश कर दी है। ज़्या हम उससे प्रेम करते हैं? ज़्या हम उस प्रेम को *व्यज़्त कर रहे* हैं?

टिप्पणियां

[1]मैं इस दृश्य की कल्पना कर सकता हूं, जिसमें एक आदमी कह रहा है, "लगता है नगर में कोई परेड हो रही है!" और दूसरा जवाब दे रहा है, "नहीं, यह तो यीशु है जो फिर नगर में आया है!" [2]यीशु के जीवन के इस भाग का यह ढंग रिचर्ड रोजर्स तथा अन्य लोगों के लेखों सहित कई स्रोतों में पाया जाता है। मैं नहीं जानता कि इसका आरज़्भ किसने किया था। [3]मज़ी के वृज़ांत से संकेत मिलता है कि सूबेदार ने सीधे यीशु से बात की, जबकि लूका के वृज़ांत में उसने उससे बात करने के लिए लोगों को भेजा। शायद दोनों ही सही थे, या शायद सूबेदार ने, जो अपने आप को अयोग्य समझता था, भेजे गए लोगों *के द्वारा* मसीह से बात की। [4]दो घटनाओं में कुछ समानताएं हैं, विशेषकर दूर से चंगाई देने के पहलू में। [5]पहली सदी के आराधनालय (सिनागॉग) के कुछ खण्डहर आज भी कफ़रनहूम में देखे जा सकते हैं। [6]परमेश्वर का भय रखने वाला

आदमी सच्चे परमेश्वर में विश्वास रखता था, परन्तु यहूदी मत में आने के लिए उसका खतना नहीं हुआ था। [7]सूबेदार का विश्वास देखकर ऐसी भविष्यवाणी हुई कि बहुत से अन्यजाति (जो ''पूर्व और पश्चिम से'') मसीह के राज्य में आने थे, जबकि बहुत से यहूदी (''राज्य की सन्तान'') नहीं बनने थे (मत्ती 8:11, 12)। [8]फ्रैंक ई. ग्रेफ, ''डज़ जीज़स केयर ?'' *सौंग्स ऑफ़ फ़ेथ एण्ड प्रेज़,* संकलन व सम्पादन, आल्टन एच. हॉवर्ड (वैस्ट मोनरो, लुईसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1994)। [9]कुछ हस्तलेखों में ''अगले दिन'' है। [10]''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' मानचित्र देखें।

[11]अनुवादित यूनानी शब्द ''अर्थी'' लकड़ी का तख़्ता भी हो सकता है, जिस पर रखकर शव ले जाया जा रहा था। कुछ लोगों का विश्वास है कि यहूदी कभी अर्थियों का इस्तेमाल नहीं करते थे। [12]भीड़ का असर यह सुझाव देता है कि यह घटना यीशु के किसी को पहली बार जिलाने की थी। एलिय्याह और एलीशा की सेवकाइयों के दौरान मुर्दों को ज़िन्दा किया गया था (1 राजा 17:17-24; 2 राजा 4:32-37), परन्तु वह यीशु के समय से बहुत, बहुत पुरानी बात थी। [13]पतरस, जो बीमारों को चंगा कर सकता था (प्रेरितों 9:32-35), मुर्दों को भी जिला सकता था (प्रेरितों 9:36-43)। [14]लूका 7:17 में ''यहूदिया'' का अर्थ ''यहूदियों का देश'' (अर्थात, पलिश्तीन) भी हो सकता है और यहूदिया का राज्य भी। जो भी हो, इस शब्द में यहूदिया का राज्य सम्मिलित है। [15]''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [16]यह तथ्य कि यूहन्ना का अपने चेलों के साथ सम्पर्क था, सुझाव देता है कि उसे भी कुछ वैसे ही अधिकार मिले थे, जैसे कैसरिया में बन्दी बनाए जाने के समय पौलुस के पास थे (प्रेरितों 24:23)। [17]कुल्हाड़े से काटने और खलिहान को साफ़ करने की यूहन्ना की भविष्यवाणियां सम्भवतया कुछ हद तक यरूशलेम के विनाश के समय पूरी हुईं। उनका पूरी तरह से पूरा होना न्याय के दिन होगा। [18]मत्ती 11:12 में यीशु के गूढ़ अर्थ वाले शब्दों का हवाला यूहन्ना और दूसरे लोगों की परमेश्वर को अपनी समयसारणी के अनुसार अपने उद्देश्य को पूरा करने की अनुमति देने के बजाय राज्य के अस्तित्व में होने की उतावली हो सकती है। [19]हमारे यहां, हम कह सकते हैं, ''जब तक हम परमेश्वर का खाता बन्द नहीं करते, तब तक वह हमारा खाता बन्द नहीं करता।'' [20]जहां तक हमें मालूम है, यीशु और यूहन्ना के बीच यह अन्तिम वार्तालाप था। हमें यीशु के संदेश पर यूहन्ना की प्रतिक्रिया नहीं बताई गई, परन्तु यह तथ्य कि कई वर्ष बाद, मत्ती और लूका ने मसीह द्वारा की गई यूहन्ना की सराहना को लिखा है, मुझे विश्वास दिला देता है कि, प्रभु की सहायता से, यूहन्ना ने अपने संदेह को विश्राम दे दिया था।

[21]*द मैन जीज़स* (ग्लैंडेल, कैलिफोर्निया: रीगल बुक्स, जी/एल पब्लिकेशन्ज़, 1967), 68 में *द लिविंग गॉस्पल्स* (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस, 1966) से उद्धृत। [22]जे. डब्ल्यू मैक़गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैण्डर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 282. [23]मैक़गर्वे एण्ड पैंडलटन, 283. [24]सभी नगर कफ़रनहूम से थोड़ी दूर थे। ''यीशु की सेवकाई के समय पलिश्तीन'' का मानचित्र देखें। [25]जूआ एक टीम के रूप में काम करने वाले दो पशुओं को ''जोतकर'' U के आकार का अरगला होता था। संसार के कई भागों में आज भी जूए का इस्तेमाल किया जाता है; कई जगह जोतने का अलग ढंग इस्तेमाल किया जाता है। पवित्र शास्त्र में अनिच्छित बोझ के लिए सामान्यतया ''जूआ'' शब्द का इस्तेमाल किया जाता था (यशायाह 9:4; यिर्मयाह 27:12; प्रेरितों 15:10; गलतियों 5:1; 1 तीमुथियुस 6:1)। परन्तु यीशु के उदाहरण में, कहने का अभिप्राय है कि विश्वासी को *मसीह के साथ* ''जोता'' गया है और मसीह स्वयं भार का बड़ा भाग उठा लेगा, यदि हम उसे उठाने दें। इसलिए उसने कहा, उसका जूआ ''सहज'' और उसका बोझ ''हल्का'' है। [26]हम नहीं जानते कि यह घटना कहां घटी। लूका 7:37 ''नगर'' की बात करता है, परन्तु हम नहीं जानते कि यह नगर कौन सा था। [27]विस्तृत अध्ययन के लिए, ''प्रेम, आंसू और क्षमा'' वाला पाठ देखें। [28]दोनों भोज शमौन नाम के आदमी के घर थे: परन्तु एक शमौन फरीसी था, जबकि दूसरा (शुद्ध हुआ) कोढ़ी। शमौन एक प्रचलित नाम था। नये नियम में नौ शमौनों का उल्लेख है; पलिश्तीन में हज़ारों शमौन होंगे। पुन:, दोनों मामलों में, इत्र से यीशु का अभिषेक किया गया था, परन्तु अलग-अलग स्त्रियों द्वारा और अलग-अलग परिणामों के साथ। [29]यह सच है कि इस घटना के तुरन्त बाद मरियम मगदलीनी का उल्लेख है (लूका 8:2), परन्तु उसका

परिचय एक ऐसे समूह के भाग के रूप में कराया गया है, जिसका पहले उल्लेख नहीं हुआ। यह भी सच है कि मरियम मगदलीनी पहले दुष्टात्मा से ग्रस्त थी (लूका 8:2), परन्तु मैज़गर्वे ने अवलोकन किया है कि "पाप और दुष्टात्मा से ग्रस्त होने में कोई सज़्बन्ध नहीं है। पाप धार्मिक व्यवहार के मान्य नियमों के प्रति अपमान को दर्शाता है, जबकि दुष्टात्मा से ग्रस्त होना पापी होने को नहीं दर्शाता। इस ज़्लेश को कभी अपमान के रूप में नहीं कहा गया, बल्कि केवल दुर्भाग्य के रूप में कहा गया है" (मैज़गर्वे एण्ड पैंडल्टन, 291)। [30]सज़्भावित कारणों पर चर्चा के लिए, इससे अगला पाठ देखें।

[31]कुछ हस्तलेखों में "भविष्यवज़्ता" है। "*एक* नबी" मसीहा के लिए था (व्यवस्थाविवरण 18:15)। [32]बाइबल में इस लघु कहानी को दृष्टांत नहीं कहा गया है, परन्तु सामान्यतया इसे दृष्टांत ही माना जाता है। [33]यह इस पर निर्भर करता है कि आपके छात्र कौन हैं, और आप रूपरेखा बना सकते हैं कि वे प्रभु की ओर कैसे लौट सकते हैं। यदि वे अभी मसीही नहीं हैं, तो उन्हें प्रेरितों 2:36–38 बताएं। यदि मसीही हैं, तो उन्हें मन फिराने और अपने पापों का अंगीकार करने के लिए तैयार होने को प्रोत्साहित करें (1 यूहन्ना 1:9; याकूब 5:16; प्रेरितों 8:22)।